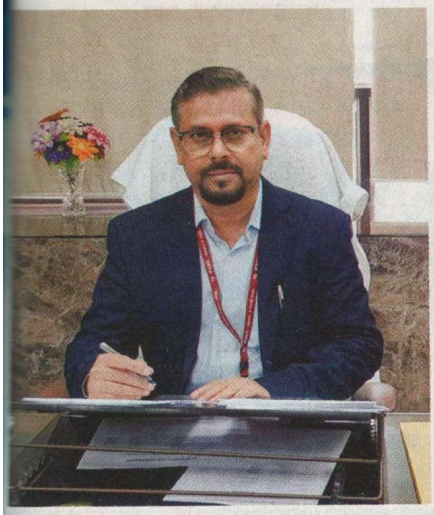

केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद

यूनानी चिकित्सा - स्वास्थ्य सेवा वितरण में मुख्यधारा

डॉ. एन. ज़हीर अहमद, महानिदेशक, के.यू.चि.अ.प.

यूनानी चिकित्सा एक व्यापक चिकित्सा पद्धति है जो स्वास्थ्य और रोगों की विभिन्न अवस्थाओं में ध्यानपूर्वक कार्य करती है। यह प्रोत्साहनात्मक, निवारक, उपचारात्मक और पुनर्वास स्वास्थ्य सेवा प्रदान करती है। लगभग 8वीं शताब्दी में भारत में स्थापित होने से पहले यूनानी चिकित्सा पद्धति कई देशों से समृद्ध होती हुई भारत पहुंची। इसके आरंभ के बाद यूनानी चिकित्सा पद्धति के विकास में भारत के निरंतर योगदान को विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त हुई। यूनानी चिकित्सा पद्धति की वैश्विक उपस्थिति है।

यूनानी चिकित्सा की सैद्धांतिक रूपरेखा चिकित्सा के जनक हिप्पोक्रेट्स की शिक्षाओं पर आधारित है। वह रोग के मूल को स्वभाव की अवधारणा के आधार पर बताने वाले पहले चिकित्सक थे और उन्होंने ही स्वभाव के चार सिद्धांत - रक्त (दमवी), कफ़ (बलगमी), पीला पित्त (सफरावी) और काला पित्त (सौदावी) को यूनानी चिकित्सा की मौलिक रूपरेखा के रूप में प्रस्तावित किया। यूनानी चिकित्सा उपचार में मुख्य रूप से पौधों से बनी औषधियों का उपयोग करती है जो व्यक्ति की मानसिक-शारीरिक स्थितियों को ध्यान में रखते हुए निर्धारित की जाती हैं। यूनानी चिकित्सा पद्धति विभिन्न रोगों के उपचार के लिए औषधि चिकित्सा के साथ-साथ कपिंग, लीचिंग, मसाज और व्यायाम आदि जैसी विभिन्न थेरेपी (इलाज-बित-तदबीर) का भी उपयोग करती है। यूनानी चिकित्सा के कुछ सशक्त क्षेत्र जिसमें विटिलिगो, एक्जिमा, सोरायसिस, हेपेटाइटिस, फाइलेरिया, मधुमेह मेलिटस, संधिशोथ, साइनसाइटिस और ब्रोन्कियल अस्थमा इत्यादि का उपचार शामिल है इनमें यह निपुण मानी जाती है।

भारत सरकार यूनानी चिकित्सा पद्धति के बहुमुखी विकास के लिए अधिक से अधिक संरक्षण और धन उपलब्ध करा रही है। परिणामस्वरूप आज यूनानी चिकित्सा पद्धति राष्ट्रीय स्वास्थ्य सेवा वितरण प्रणाली का एक अभिन्न अंग है। वर्तमान में भारत में लगभग 57 कॉलेज, जिनमें 37 पूर्वस्नातक, 17 स्नातकोत्तर और 03 एकल स्नातकोत्तर संस्थान शामिल हैं जो यूनानी चिकित्सा में शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान कर रहे हैं। देश में 262 यूनानी अस्पताल, 1745 यूनानी औषधालय, 608 यूनानी औषधि निर्माण इकाइयां और लगभग 50,011 यूनानी चिकित्सक हैं। आयुष मंत्रालय ने बेंगलुरु में एक राष्ट्रीय यूनानी चिकित्सा संस्थान (एनआईयूएम) की भी सफलतापूर्वक स्थापना की जो कि एक शीर्ष संस्थान है और गाजियाबाद में अपने संबंधित केंद्र के साथ यूनानी चिकित्सा में स्नातकोत्तर और पोस्ट-डॉक्टरेट शिक्षा और अनुसंधान कार्यक्रम प्रदान करता है।

केंद्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान परिषद (के.यू.चि.अ.प.) आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के अधीनस्थ एक स्वायत्त संस्था है और पिछले चार दशकों में यह यूनानी चिकित्सा में मुख्य अनुसंधान संस्था के रूप में उभरा है। इसका उद्देश्य "विभिन्न रोगों की रोकथाम/उपचार हेतु गुणवत्ता सुनिश्चित और लागत प्रभावी उत्पादों के लिए व्यापक अनुसंधान द्वारा यूनानी चिकित्सा के क्षेत्र में उत्कृष्टता और वैश्विक नेतृत्व के लिए प्रयास करना है।" परिषद के अनुसंधान कार्यक्रम में मुख्य रूप से यूनानी औषधि सुरक्षा एवं प्रभावकारिता अध्ययन, मूल सिद्धांतों एवं संघटित चिकित्सा का वैधीकरण, औषधि मानकीकरण एवं गुणवत्ता नियंत्रण, औषधीय पादप सर्वेक्षण एवं कृषि और साहित्यिक अनुसंधान सहित नैदानिक अनुसंधान शामिल हैं।

यूनानी चिकित्सा के क्षेत्र में अनुसंधान में उत्कृष्टता हासिल करने के लिए परिषद अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान (एम्स), नई दिल्ली, वैज्ञानिक तथा औद्योगिक अनुसंधान परिषद (सीएसआईआर), जामिया मिल्लिया इस्लामिया (विश्वविद्यालय) नई दिल्ली, जामिया हमदर्द (विश्वविद्यालय) नई दिल्ली, राष्ट्रीय औषधीय शिक्षा एवं अनुसंधान संस्थान (नाईपर) हैदराबाद, एमिटी यूनिवर्सिटी, नोएडा, वल्लभ भाई पटेल चेस्ट इंस्टीट्यूट, नई दिल्ली, पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन ऑफ इंडिया, अलीगढ़ मुस्लिम विश्वविद्यालय और देश के विभिन्न अन्य प्रीमियम संस्थानों के साथ सहयोग कर रही है। परिषद ने नई विकसित प्रौद्योगिकियों के पेटेंट और व्यावसायीकरण की सुविधा के लिए राष्ट्रीय अनुसंधान विकास सहयोग के साथ समझौता ज्ञापन पर भी हस्ताक्षर किये।

परिषद ने अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर यूनानी चिकित्सा के वैश्वीकरण के लिए कई पहल की हैं। स्कूल ऑफ नेचुरल मेडिसिन, यूनिवर्सिटी ऑफ वेस्टर्न केप, दक्षिण अफ्रीका में एक अकादमिक चेयर की स्थापना की गई। परिषद ने हमदर्द विश्वविद्यालय, बांग्लादेश और एविसेना ताजिक स्टेट मेडिकल यूनिवर्सिटी (एटीएसएमयू), दुशांबे, ताजिकिस्तान के साथ अलग-अलग सहमति पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं।

परिषद ने भारत के छः शहरों में उच्च जोखिम वाली आबादी में कोविड-19 संक्रमण की रोकथाम के लिए यूनानी रोगनिरोधी हस्तक्षेप के प्रभाव पर (रोगप्रतिरोधक क्षमता बढ़ाने वाला) जनसंख्या-आधारित अध्ययन भी शुरू किए गए। यह अध्ययन नई दिल्ली, मुंबई, लखनऊ,अलीगढ़,श्रीनगर और बैंगलोर में स्थित परिषद के विभिन्न केंद्रों के माध्यम से कोविड-19 उच्च जोखिम वाले क्षेत्रों में किये गए। अध्ययन ने कोविड-19 के विरुद्ध यूनानी हस्तक्षेप के समर्थन में साक्ष्य आधारित डेटा तैयार किया और यूनानी चिकित्सा की रोग निवारक क्षमता को समझने में नए क्षितिज प्रशस्त किए। आयुर्वेद एवं यूनानी तिब्बिया कॉलेज, करोल बाग, नई दिल्ली में कोविड-19 उपचार सुविधा का भी आयोजन किया गया । इसी तरह का एक और अध्ययन सफदरजंग अस्पताल, नई दिल्ली में भी शुरू किया गया ।

परिषद ने दिल्ली में तृतीयक देखभाल एलोपैथिक अस्पतालों में तीन सह-केंद्र जैसे डॉ. राम मनोहर लोहिया (आरएमएल) अस्पताल में यूनानी चिकित्सा केंद्र, दीन दयाल उपाध्याय (डीडीयू) अस्पताल और सफदरजंग अस्पताल में यूनानी विशेषज्ञ केंद्र भी स्थापित किए। परिषद अपने दो केंद्रों अर्थात राष्ट्रीय त्वचा रोग यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, हैदराबाद और क्षेत्रीय यूनानी चिकित्सा अनुसंधान संस्थान, श्रीनगर के माध्यम से शैक्षणिक गतिविधियां भी चला रही है। परिषद आयुष मंत्रालय, भारत सरकार के सहयोग से आम लोगों तक स्वास्थ्य सेवा वितरण को मुख्यधारा में लाने के लिए प्रतिबद्ध है।